Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

प्राचीन भारतीय राजनीति

B.S.K.G.-178

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. Hindi, B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

विषय-सूची

प्राचीन भारतीय राजनीति

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Sample Question Paper—1 (Solved) 1

Sample Question Paper—2 (Solved) 1

Sample Question Paper—3 (Solved) 1

क्र.स.	Chapterwise Reference Book	पृष्ठ संख्या

प्राचीन भारतीय राजनीतिक का विशेष-क्षेत्र और उत्पादिता

1. प्राचीन राजनीतिशास्त्र के नाम : दण्डनीति, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र 1

2. राजनीति का विषय-क्षेत्र : धर्म, अर्थ और नीति 10

3. वैदिक राजनैतिक चिंतक 15

4. प्राचीन भारतीय गणतंत्र व बौद्ध साहित्य 25
(दिघ्घनिकाय-महापरिनिब्बानसुत्त, अंगुत्तरनिकाय 1-213, 4-252, 256)

5. राजनीतिक चिंतन के स्रोत 31

खंड-2 राज्य के प्रकार और स्वरूप

6. राज्य के प्रकार 41

7. सप्तांग का सामान्य परिचय 49

8. स्वामी, राजा के गुण, दैवी उत्पत्ति 57

9. भारतीय राजतंत्र का स्वरूप 63

खंड-3 राज्य मन्त्रिपरिषद् और सभाएं

10. मन्त्रिपरिषद् (अर्थशास्त्र 1.15-23-24 1.15.48-50, 1.15.60-62 एवं शुक्रनीति 2.1-10).... 71
11. केन्द्रीय सभा व स्थानीय शासन 81
12. नगर सभा : रामायण व महाभारत में पौर-जनपदों की भूमिका 91
13. ग्रामीण व्यवस्था : सभा, पंचकुल, पंचायत 97
14. शासकीय व सामाजिक न्याय सभाएँ : राजकीय न्यायालय-धर्मस्थानीय (अर्थशास्त्र 3.1.1)..... 103

खंड-4 न्याय व्यवस्था, कर-प्रणाली और अंतर्राज्यीय व्यवस्था

15. धर्म के स्रोत : धर्म, व्यवहार, चरित्र व राजशासन (अर्थशास्त्र 3.1.51-52), शास्त्र व आचार का संबंध (अर्थशास्त्र 3.1.56-57, याज्ञवल्क्य स्मृति 2) 110
16. सामाजिक न्यायालय 116
17. दण्ड का महत्त्व व न्यायाधिकारी के गुण (मनुस्मृति 7.17-20, 7.26-31) 123
18. व्यवहार पदों का सामान्य परिचय भाग-1 : धन संबंधी विवाद 130
19. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धांत : मण्डल व षड्गुण 137
20. षड्गुण का सिद्धांत 144
21. कर व्यवस्था 150
22. अंतर्राज्यीय संबंध का सिद्धांत : साम, दाम, दण्ड और भेद 155

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

प्राचीन भारतीय राजनीति

B.S.K.G.-178

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच के उत्तर दीजिए–

(i) **बौद्धकालीन गणतंत्रात्मक राज्य के स्वरूप एवं क्षेत्र का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'प्राचीन भारतीय गणतंत्र'

(ii) **सप्तांग सिद्धांत एवं शुक्राचार्य अथवा सभा, समिति एवं कौटिल्य पर विस्तारपूर्वक लिखिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-49, 'सप्तांग सिद्धांत', अध्याय-11, पृष्ठ-86, प्रश्न 3

(iii) **भारतीय राजतंत्र के स्वरूप एवं राजधर्म का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-64, 'राजधर्म'

(iv) **मन्त्रिपरिषद का क्या अर्थ है? उनके अधिकार एवं कर्त्तव्यों का वर्णन विस्तारपूर्वक कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-71, 'मंत्रिपरिषद् का परिचय', पृष्ठ-73, 'मंत्रिपरिषद के कर्त्तव्य'

(v) **रामायणकालीन व महाभारतकालीन पौर एवं जनपदों का विवेचनात्मक विश्लेषण कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-91, 'रामायणकालीन नगरसभा', पृष्ठ-92, 'महाभारतकालीन सभा'

(vi) **दक्षिण भारतीय शासन-व्यवस्था क्या है? ग्रामीण शासन-व्यवस्था की विवेचना कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-98, 'दक्षिण भारत में ग्रामीण शासन', पृष्ठ-99, 'दक्षिण भारतीय शासन व्यवस्था'

(vii) **धर्म की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए धर्म, व्यवहार और चरित्र तथा राजशासन का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'धर्म', पृष्ठ-12, प्रश्न 1, अध्याय-15, पृष्ठ-111, 'धर्म व व्यवहार में भेद', 'व्यवहार के स्रोत'

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(i) **शासकीय व अनौपचारिक संस्थाओं का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-116, 'शासकीय व अनौपचारिक संस्थाएं'

(ii) **दण्ड के महत्त्व का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-124, 'दण्ड का महत्त्व'

(iii) **व्यवहार पदों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-130, 'परिचय', 'ऋणादान', 'निक्षेप'

(iv) **प्राचीन भरतीय कर-व्यवस्था का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-153, प्रश्न 3

(v) **अन्तर्राज्यीय संबंधों को स्पष्ट करते हुए साम, दाम, दण्ड और भेद पर विस्तारपूर्वक लिखिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-22, पृष्ठ-156, 'अंतर्राज्यीय संबंध का सिद्धांत'

(vi) **प्राचीन भारतीय गणतंत्र के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बौद्धशास्त्रीय ग्रन्थों की विषय-वस्तु का वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'बौद्ध साहित्य'

(vii) **भारतीय राजतंत्र के स्वरूप का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।**

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-47, प्रश्न 2

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सामाजिक न्यायालय-कुल, पूग, श्रेणी

उत्तर–कुल का अर्थ परिवार से है, जिसमें परिवार के मुखिया के अनुसार न्याय किया जाता है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-16, पृष्ठ-120, 'पूग', पृष्ठ-122, 'श्रेणी'

(ख) सभा और समिति

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-88, प्रश्न 2

(ग) मत्स्य-न्याय

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-65, 'मत्स्य न्याय'

(घ) ग्रामीण-व्यवस्था

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-98, 'ग्रामीण व्यवस्था'

■■

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

प्राचीन भारतीय राजनीति

B.S.K.G.-178

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट: **किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।**

प्रश्न 1. सप्तांग सिद्धान्त का वर्णन करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-51, प्रश्न 1

प्रश्न 2. नीतिशास्त्र शब्द में नीति का अर्थ क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 7

प्रश्न 3. गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था पर टिप्पणी करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-86, प्रश्न 4

प्रश्न 4. भारतीय सामाजिक चिन्तन में धर्म किसे कहते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-125, प्रश्न 1

प्रश्न 5. कौटिल्य अर्थशास्त्र को कितने अधिकरणों में विभक्त किया गया है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-18, प्रश्न 9

प्रश्न 6. राजा के गुणों का वर्णन करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-60, प्रश्न 2

प्रश्न 7. राजनीति के चार उपाय क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-145, प्रश्न 2

प्रश्न 8. भाड़े के सैनिकों के संगठन क्या कहलाते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-119, प्रश्न 9

प्रश्न 9. चतुर्विध उपाय का क्या अर्थ है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-157, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) प्राचीन भारतीय गणतंत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-25, 'प्राचीन भारतीय गणतंत्र'

(ख) मन्त्रिपरिषद्

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-71, 'मन्त्रिपरिषद्'

(ग) न्याय सभाएं

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-103, 'न्याय सभाएं'

(घ) मण्डल सिद्धांत

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-137, 'मण्डल सिद्धांत'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

प्राचीन भारतीय राजनीति

प्राचीन राजनीतिशास्त्र के नाम : दण्डनीति, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र

1

परिचय

भारत में प्रारम्भ से ही प्राचीन भारतीय राजनीति संबंध विषयों पर चर्चा निरन्तर होती रही है। 'राजस्व' के सिद्धांतों का ऋग्वेद में भी वर्णन है, किन्तु वैदिक काल में राजनीतिशास्त्रों का निर्माण स्वतन्त्र रूप से नहीं हुआ था और न ही राजनीति से जुड़े किसी विषय का प्रचलन था। उत्तर वैदिक काल के बाद कौटिल्य के अर्थशास्त्र तथा महाकाव्यों, रामायण एवं महाभारत में प्राचीन राजनीति विज्ञान के नामों का उल्लेख शुरू हो गया था। विशेष रूप से महाभारत में उल्लिखित राजनीति शास्त्र के नामों में बृहस्पति, भारद्वाज आदि को राजशास्त्रप्रणेता कहा गया है। अश्वघोष ने भी इस शब्द का प्रयोग 'बुद्धचरितम्' में किया है।

प्राचीन समय में राजशास्त्र का प्रभाव सर्वाधिक देखने को मिलता है। महाभारत में कहा गया है–हाथी के पैर में सबका पैर, उसी प्रकार राजशास्त्र में सभी शास्त्र आ जाते हैं। राजशास्त्र अत्यन्त व्यापक विषय है। इसमें निहित विषय धर्म से भी संबंधित है। राजनीतिशास्त्र में ही सामाजिक व्यवस्था, धर्म व राजसत्ता आदि सम्मलित थे, जो व्यक्ति को कल्याण के मार्ग पर चलने को प्रेरित करते थे।

अध्याय का विहंगावलोकन

भारतीय राजनीतिक चिंतन का आशय

प्राचीन भारतीय चिंतन का इतिहास अत्यधिक पुरातन है। वैदिक काल से मुगल काल तक इसका विस्तार एवं विकास माना जाता है। प्रारम्भिक काल में जब संसार में चिन्तन का कोई अंश नहीं था, उस समय भी भारतीय राजनैतिक व सामाजिक चिन्तन अपने महान रूप में उपस्थित था। वैदिक काल से आधुनिक समय तक चिन्तन की यह गौरवशाली परम्परा निरंतर विद्यमान है।

औपनिवेशिक काल में पाश्चात्य विचारकों ने भारतीय चिन्तन के अत्यन्त साधारण होने का भ्रम फैलाया। इस भ्रम को पूर्वाग्रह से पूर्णत: ग्रस्त मैक्समूलर, डेनिंग जैसे पाश्चात्य चिंतकों ने आगे बढ़ाया, किन्तु समय बीतने के साथ विश्व के समक्ष नए तथ्य प्रस्तुत होने लगे और पाश्चात्य विचारकों द्वारा उत्पन्न भ्रम समाप्त हो गया। भारत में राजनैतिक चिन्तन का व्यापक विवरण प्लेटो तथा अरस्तू से शताब्दियों पूर्व देखने को मिलता है। वेद, पुराण व उपनिषद् भारतीय चिंतन के उत्कृष्ट प्रमाण हैं। एशियाटिक सोसायटी के उदय के उपरान्त तत्क्षणिक स्थिति में बदलाव हुआ व ब्रिटेन की परिवर्तित परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति व इतिहास की जानकारी की आवश्यकता प्रतीत होने पर भारतीय राजनीतिक चिन्तन का नया स्वरूप संसार के समक्ष आया।

राजनीतिशास्त्र के विभिन्न नाम

राजनीतिक चिन्तन को प्राचीन काल में विभिन्न नार्मों से सम्बोधित किया जाता था। विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों में इसके विविध नाम मिलते हैं, जैसे–स्मृतियों में राजधर्म, महाभारत में राजशास्त्र, दण्डनीति एवं अर्थशास्त्र तथा पंचतंत्र में नृपतंत्र। राजनीतिक चिन्तन को दण्डनीति कहने का आधार है कि राजसत्ता का अंतिम आधार दण्ड है। यदि कानून का उल्लंघन करने वालों को राजनैतिक सत्ता दण्ड न दे, तो सम्पूर्ण राज्य में अराजकता फैलेगी और दण्ड द्वारा भय उत्पन्न करके ही व्यवस्था को राज्य व्यवस्था को पुन: सुचारु रूप से व्यवस्थित किया जा सकता है।

कौटिल्य ने दंड की अवधारणा को पूर्णत: अस्वीकार कर दिया। उनके अनुसार दण्ड से भय तो उत्पन्न होता है, किन्तु कर्त्तव्य पालन के प्रति सजगता नहीं आ पाती और जनता में नैतिक कर्त्तव्यों के स्वयं पालन करने की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है। मनु के अनुसार दण्ड देने वाली सत्ता राजा नहीं, बल्कि दण्डशासक है। इसी कारण शासक व समाज को कर्त्तव्य बताने वाले शास्त्र को दण्डनीति के नाम से जाना गया।

नीतिशास्त्र शब्द में नीति का अर्थ सही मार्ग दिखाना है अर्थात उचित व अनुचित में अंतर बताने वाला शास्त्र ही नीतिशास्त्र है। भर्तृहरि की रचना 'नीति शतक' नीति शास्त्र का व्यापक ग्रंथ है।

कामदंक तथा शुक्र शासन सबंधी ग्रन्थ नीतिशास्त्र के नाम से ही जाने जाते हैं। कौटिल्य का मत था कि अर्थ शब्द से व्यक्ति का व्यवसाय व भूमि का संकेत मिलता है। अत: उस भूमि को प्राप्त कर उसे बनाये रखने का शास्त्र ही 'अर्थशास्त्र' है। शुक्रनीति के अनुसार अर्थशास्त्र का क्षेत्र मात्र संपत्ति के प्राप्ति के उपायों की चर्चा न होकर शास्त्र के सिद्धांतों को स्थापित करना भी है। कामंदक के समय में जो नीति शब्द राज्य की नीति के संबंध में प्रयुक्त आचरण भी है। प्राचीन समय में राजशास्त्र का व्यापक प्रभाव रहा।

दण्डनीति

दण्ड, राजा के लिए निर्दिष्ट चार उपायों (साम, दान, दण्ड, भेद) में से एक है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में दण्ड के सभी पक्षों पर गहनता से विचार हुआ है। दण्ड देने का अधिकार राजा का था, किन्तु राजव्यवस्था के लिए नियुक्त अन्य अधिकारी भी दण्ड दे सकते थे। दण्ड के अलावा प्रायश्चित की भी व्यवस्था थी। जहाँ दण्ड, राजा के द्वारा दिया जाता था, प्रायश्चित व्यक्ति अपनी इच्छा और विचार से करता था।

प्राचीन भारत में राजा को यह निर्देशित था कि दण्ड द्वारा वह बाह्य तथा अभ्यान्तरिक शत्रुओं का दमन करे। दण्ड नीति का पालन करने वाला व्यक्ति देवताओं से भी पूज्य हो जाता है तथा दण्ड न देने वाले व्यक्ति की प्रशंसा तक नहीं होती है। मत्स्य पुराण में यह उल्लेख आया है कि दण्ड देने के कारण ही इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, विष्णु एवं अन्य देवताओं की पूजा सभी लोग करते हैं। दण्ड ही एक ऐसा माध्यम है, जो अभिमान से उन्मत्त लोगों को वश में करके उन्हें उसका फल चखाता है, इसलिए दण्ड के द्वारा दुर्जन व्यक्ति को वश में करने तथा दण्ड की महिमा को केवल बुद्धिमान लोग ही जानते हैं। चार उपायों में दण्ड को सर्वोत्तम बताया गया है।

कौटिल्य अपने अर्थशास्त्र में दण्ड की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि तीक्ष्ण, उत्साही, व्यसनी तथा दुर्ग आदि से युक्त शक्तिशाली शत्रु को गूढ़ पुरुष शस्त्र, अग्नि द्वारा मार डाले। इस प्रकार शत्रु के द्वारा किये जाने वाले अपकार हेतु, उसे आक्रान्त करने के लिए जिन उपायों का आश्रय लिया जाता है उसे दण्डोपाय कहते हैं। कामंदक ने भी अपने नीतिसार में दण्ड के तीन भेद स्वीकार करते हुए कहा है कि शत्रु का धन हरण कर लेना, शारीरिक, कष्ट देना तथा उसका वध कर देना ही दण्ड के तीन भेद हैं। इसके अतिरिक्त अन्य दो प्रकार का भेद बताते हुए 'प्रकाश दण्ड' और 'अप्रकाश दण्ड' का उल्लेख करते हैं। इस सम्बन्ध में उनका विचार है कि प्रजाद्वेषी पुरुष और शत्रु पर प्रकाश (प्रकट) दण्ड का प्रयोग करना चाहिए। जिन दण्डों को देने से प्रजा उत्तेजित हो, उस दण्ड को अप्रकाश दण्ड या गुप्त रीति से देना चाहिए। शुक्र ने भी दण्ड को उसी समय आचरण करने का आदेश देते हैं, जिस समय उसे प्राणों का संशय न हो।

धर्मशास्त्र

राजनीतिशास्त्र का पर्याय शब्द 'धर्मशास्त्र' माना गया है। यद्यपि समाज में उपस्थित विविध संस्थाओं से संबंधित नियमों को स्थापित करने वाला शास्त्र धर्मशास्त्र है। राजधर्म धर्मशास्त्र का अन्यतम विषय है। अत: राजा के धर्म एवं राज्य से संबंधित विविध विधानों का निर्धारण करने के रूप में 'धर्मशास्त्र' को राजनीतिक ग्रंथ माना गया। उत्तर वैदिक काल में धर्मसूत्रों के अंतर्गत ही प्रथम बार 'राजधर्म' का संहितात्मक (व्यवस्थित) रूप सामने आया। इसके बाद स्मृति ग्रंथों में भी 'राजधर्म' का विस्तृत विवेचन प्राप्त हुआ अत: 'धर्मशास्त्र' राजनीतिविज्ञान का पर्याय बन गया।

नीतिशास्त्र

'नीति' शब्द संस्कृत की 'नी' धातु से निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ नेतृत्व करना अथवा प्राप्त करना है। इसी से 'नय' (तर्कशास्त्र) और 'न्याय' (निष्पक्ष निर्णय) शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। कामंदक ने दण्डनीति का लक्षण देते हुए इसकी व्याख्या 'नयानान्नीतिरुच्यते' (नयन करने से नीति कही जाती है) किये हैं। कामंदक ने अर्थशास्त्र नामक सिंधु से नीतिशास्त्र रूपी अमृत निकलने की बात की है–

'नीतिशास्त्रामृतं धीमानार्थ शास्त्रमहोदधेः।'

आजकल की सरल परिभाषा में नीति वह शास्त्र है–जो शुद्ध-अशुद्ध, सत्य-असत्य, उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ के आधार पर मानव चरित्र का विवेचन करता है। सामादि चतुष्टय उपायों में दण्ड का स्थान अन्तिम है। राजशास्त्र प्रेणताओं ने अपने ग्रन्थों में शासक को यह निर्देश दिया है कि जब शान्ति के तीनों उपाय विफल हो जाते हैं, तब उसे अन्तिम उपाय दण्ड का आश्रय लेना चाहिए। लालची, क्रूर, आश्रय प्राप्त शत्रु, दु:ख देने पर ही संशय छोड़कर वश में आते हैं, जिसे स्वयं लक्ष्मी प्राप्त है, उसे दान देने से क्या फल होगा? अर्थात् दुर्जन व्यक्ति के लिए साम नीति का फल शून्य होता है। ये सामनीति को मात्र भय का कारण मानते हैं। अत: उन लोगों के लिए दण्ड नीति का आश्रय लेना श्रेयस्कर है। यही कारण है कि विद्वान व्यक्ति दण्ड की प्रशंसा करते हैं। इसी कारण इसे चार उपायों में सर्वोत्तम बताया गया है।

चौथी व पांचवीं शताब्दी में 'दण्डनीति' और 'अर्थशास्त्र' के स्थान पर 'नीतिशास्त्र', 'राजनीतिशास्त्र' और 'नयशास्त्र' जैसे शब्द प्रचलित हो गए। उशनम् के ग्रन्थ 'दण्डनीति' का ही संशोधित रूप शुक्राचार्य के नाम पर आधारित ग्रंथ 'शुक्रनीति' के नाम से प्रचलित हुआ।

पंचतंत्र में 'अर्थशास्त्र' और 'नीतिशास्त्र' पर्यायवाची बताए गए हैं। याज्ञवल्क्य जिस 'अर्थशास्त्र' का उल्लेख करते हैं, वह वास्तव में 'राजनीतिशास्त्र' है तथा धर्मशास्त्र का अभिन्न अंग है। 'राजनीति' शब्द का उल्लेख मनुस्मृति, महाभारत के अनुशासनपर्व, रघुवंशम्, आश्रमवासिक पर्व, महाभारत के शांतिपर्व में अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र अर्थात् राजनीतिक शास्त्र के लिए प्रयुक्त हुआ है।

शांतिपर्व में उल्लिखित है कि जिस माध्यम से लोग नयमार्ग उचितमार्ग से भ्रष्ट न हों, उन मार्गों का निर्देश नीतिशास्त्र कहा गया है।

अर्थशास्त्र–'अर्थशास्त्र' शब्द 'दण्डनीति' का पर्याय बन गया। आपस्तंबधर्मसूत्र के अनुसार राजा को ऐसे पुरोहित की नियुक्ति

करनी चाहिए, जो 'धर्म' और 'अर्थ' में पारंगत हो। 'अर्थशास्त्र' का प्रयोग शासन शास्त्र के अर्थ में किया गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भी उल्लेख है कि बृहस्पति तथा अन्य आचार्यों ने अर्थशास्त्र की रचना की। भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चतुष्टय में 'अर्थ' को महत्त्व दिया गया है। चूंकि 'अर्थ' के माध्यम से ही सभी कार्य सम्पन्न होते हैं। अत: 'अर्थ' का समबन्ध मनुष्यों और प्रबन्धन से है। इस प्रकार समाज एवं राज्य में सर्वविध कल्याण के उद्देश्य को पूर्ण करने वाली विद्या 'अर्थशास्त्र' है। अर्थनीति के उद्देश्य की पूर्ति में व्यवधान उत्पन्न करने वाले अपराधियों को दण्ड के विचार में अर्थशास्त्र को ही 'दण्डनीति' नाम दिया गया। कौटिल्य के अनुसार लोककल्याण हेतु राज्य की प्राप्ति और उसके पालन हेतु व्यवस्था को निर्धारित करने वाला शास्त्र ही 'अर्थशास्त्र' है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन उच्च कोटि का है? (सत्य/असत्य)

उत्तर–सत्य।

प्रश्न 2. भारतीय राजनीतिक चिंतन पाश्चात्य चिन्तन से प्राचीन है? (सत्य/असत्य)

उत्तर–सत्य।

प्रश्न 3. कौटिल्य की रचना का क्या नाम था?

उत्तर–कौटिल्य की रचना का नाम अर्थशास्त्र है। अर्थशास्त्र में 'मनुष्याणां वृत्तिरर्थ:। मनुष्यवती भूमिरित्यर्थ:। तस्या: पृथिव्या: लाभपालनोपाय: शास्त्रम-शास्त्रमिति' कहे जाने का भी यही अर्थ है। इस प्रकार लोककल्याण हेतु राज्य की प्राप्ति और उसके पालन हेतु व्यवस्था को निर्धारित करने वाला शास्त्र ही 'अर्थशास्त्र' है।

प्रश्न 4. प्राचीन भारतीय चिंतन के प्रमुख स्रोत कौन-से हैं?

उत्तर–प्राचीन भारतीय चिन्तन के अनेक स्रोत है। इसमें मुख्य रूप से प्राचीन साहित्य, जैसे–वेद, पुराण, धर्म सूत्रों, धर्मशास्त्रों, उपनिषदों, महाकव्यों, जैन ग्रन्थों तथा बौद्ध जातक शमिल हैं। इनके अतिरिक्त समय-समय पर विभिन्न विद्वानों की रचनाओं, जैसे– कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कामंदकीय नीतिशास्त्र, शुक्रनीति आदि प्रमुख हैं। इसी समय अनेक शासकों के समय विदेशी विद्वानों ने उनके राज्य का न केवल भ्रमण किया, वरन् व्यापक सामयिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विश्लेषण अपने ग्रन्थों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। इसमें फाह्यान एवं ह्वेनसांग का विवरण उल्लेखनीय है। कुछ संस्कृत के विद्वानों जैसे पाणिनी के व्याकरण अष्टध्यायी, कालिदास के रघुवंश, विशाखदत्त के मुद्राराक्षस से भी जानकारी मिलती है। यहां पर डॉ. जायसवाल का कथन प्रासंगिक हो जाता है, ''हमें इस विषय का ज्ञान कराने वाले साधन हिन्दू साहित्य के विस्तृत क्षेत्र में मिलते हैं। वैदिक संस्कृत तथा प्राकृत ग्रन्थों और इस देश के शिलालेखों तथा सिक्कों में रक्षित लेखों में हमें इस विषय की बहुत-सी बातें प्राप्त होती हैं। इस समय हिन्दू राजनीतिशास्त्र के कुछ मूल ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं।''

भारतीय चिन्तन के स्रोत को अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैं–

1. देशी अथवा भारतीय स्रोत
2. विदेशी स्रोत

1. देशी स्रोत–देशी अथवा भारतीय स्रोत में अनैतिहासिक साहित्य एवं इतिहास परक साहित्य दोनों शामिल हैं। इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वैदिक साहित्य हैं, जिनमें मुख्य रूप से वेद उनकी संहिताएं, ब्राह्मण ग्रन्थ और सूत्र सम्मिलित है। वैदिक साहित्य के बाद महाकाव्यों, जैसे–रामायण, महाभारत का स्थान आता है। इसके अतिरिक्त अन्य धार्मिक साहित्य, जैसे–बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य आदि का भी उल्लेखनीय योगदान है। भारतीय चिन्तन की स्पष्ट झलक कौटिल्य के अर्थशास्त्र तथा नीतिशास्त्र में भी दिखाती है। भारतीय चिन्तन के भारतीय स्रोत निम्नलिखित हैं–

(क) वेद–भारतीय धार्मिक साहित्य के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं। ये चार भागों में हैं, जिनको ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद आदि हैं। इनमें वेदों के माध्यम से शासन तथा राज्य की उत्पति के सिद्धांतों का पता चलता है। इसमें राजा के अधिकार, राजा-प्रजा संबंध तथा शासन नीतियों का विस्तृत मिलता है। वास्तव में वेद प्राचीनतम स्रोत है। इनसे तत्कालीन राजनीति तथा पद्धति का अच्छा ज्ञान होता है।

(ख) ब्राह्मण तथा उपनिषद–वैदिक मंत्रों तथा संहिताओं की टीकाओं को ब्राह्मण कहा जाता है। ब्राह्मण साहित्य में मुख्य रूप से पंचविश, शतपथ, तैतरीय आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

उपनिषदों द्वारा तत्कालीन समाज, शासन तंत्र, राजा प्रजा संबधों का पता चलता है। उपनिषदों की संख्या बहुत है। इसमें मुख्य रूप से वृहदारण्यक, छान्दोग्य, केन, कट, प्रश्न, मुण्डक आदि प्रमुख हैं। इनमें बिंबिसार के पूर्व की राजनैतिक दशा का ज्ञान होता है।

(ग) महाकाव्य–वैदिक साहित्य के बाद साहित्य के दो स्तम्भों रामायण तथा महाभारत की रचना हुई। प्राचीन भारतीय सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक दशा को सामने लाने का श्रेय इन ग्रन्थों को है। रामायण के रचयिता वाल्मीकि ने भगवान राम के चरित्र वर्णन से सम्पूर्ण समाज का चित्र ही उकेरकर रख दिया है। महाभारत के शांति पर्व में राजधर्म पर्व के अध्यायों में राजा के कर्तव्य तथा राज्य के साथ संबंधों का वर्णन है। ये प्राचीन चिन्तन को मजबूत करते हैं।

(घ) पुराण–महाकाव्यों के साथ पुराण अपने समय की ऐतिहासिक सामग्री प्रदान करते हैं। ये महाकाव्यों के समकालीन हैं। इसमें आदिम काल से गुप्तकाल की समस्त सामग्री का उल्लेख है। विष्णु पुराण मौर्य वंश के विषय में, मत्स्य पुराण आंध्र वेश के विषय में व्याख्या करते हैं। वायुपुराण में गुप्तों के विषय में जानकारी उपलब्ध कराते हैं। वायु पुराण में ही सामाजिक राजनीतिक

व्यवस्था की उत्पति का वर्णन है। राजनैतिक दृष्टि से अग्नि पुराण का महत्त्व सर्वाधिक है, जिसमें शासन का जनकल्याण का आधार बताया गया है। मार्कण्डेय पुराण में सामाजिक वर्ण व्यवस्था के नियमों के पालन तथा जनकल्याण पर बल दिया गया है।

(ङ) स्मृतियाँ–ऐतिहासिक उपयोगिता के दृष्टिकोण से स्मृतियों का विशेष महत्त्व है। मनु, विष्णु, याज्ञवल्वय, नारद, बृहस्पति, पराशर आदि की स्मृतियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। ये धर्मशास्त्र के नाम से विख्यात हैं। इन स्मृतियों में साधारण वर्णाश्रम, धर्म, राजा के कर्तव्य, प्रायश्चित आदि का विस्तृत विवरण है।

(च) जैन साहित्य–जैन साहित्य प्राचीन चिन्तन को प्रमाणित करता है। मुख्य रूप से जैन साहित्य प्राकृत भाषा तथा संस्कृत भाषा दोनों में उपलब्ध है। जैन सूत्रों में इतिहास की अनेक उपयोगी सामग्री है। जैन साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि से आचार्य हेमचन्द्र लिखित 'परिशिष्ट पर्वन' बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस ग्रन्थ में महावीर के काल से मौर्यकाल का विस्तृत विवरण मिलता है। भद्रबाहु चरित नामक दूसरे ग्रन्थ में भद्रबाहु से लेर चन्द्रगुप्त मौर्य तक बहुत जानकारी मिलती है।

(छ) बौद्ध साहित्य–बौद्ध धर्म में तीन प्रमुख ग्रन्थ हैं, जिन्हें त्रिपटक के नाम से जाना जाता है। इनमें सुत्त पिटक, धम्म पिटक और विनय पिटक आदि है। इसमें बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है। इससे तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है। निकाय एवं जातक ग्रंथों में तत्कालीन एवं पूर्ववर्ती समाज का उल्लेख है। बौद्ध धर्म ग्रन्थ दिव्यावदान, ललितावस्तार, महावस्तु, मंजुशी आदि संस्कृत ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त अश्वघोष का बुद्ध चरित वसुबंधु का धर्मकोश, नागार्जुन का माहयियका सूत्र महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

(ज) लौकिक साहित्य–लौकिक साहित्य तत्कालीन समाज का विभिन्न काल खण्ड में चित्रण करते हैं। इसमें कालिदास की रचनायें, पाणिनी की रचनाएं, पतंजलि की रचनाएं प्रमुख हैं। उक्त विद्वानों ने अपनी रचनाओं जैसे पाणिनी की अष्टध्यायी तथा पंतजलि की व्याकरण महाभाष्य के द्वारा तत्कालीन समाज का चित्र खींचा।

(झ) कौटिल्य का अर्थशास्त्र–कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' भारत का ही नहीं, वरन् विश्व के प्रमुख राजनैतिक ग्रन्थों में से एक था। इसे राजनीतिशास्त्र का आधार माना जाता है। 'अर्थशास्त्र' में राजा को वेद तथा तत्वज्ञान आदि विषय का अध्ययन करने को कहा गया है। सलटोरो के शब्दों में, ''प्राचीन भारत की राजनीतिक विचारधाराओं में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य कौटिल्य की विचारधारा है।''

(ञ) नीतिशास्त्र–नीतिशास्त्रों में कामंदकीय नीतिशास्त्र तथा शुक्रनीति सार का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कौटिल्य के बाद राज्य एवं शासन पर लिखे ग्रन्थों में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। कामंदकीय नीतिसार गुप्तकाल में 500 ई. के आसपास लिखा गया। शुक्रनीति भी तत्कालीन शासन व्यवस्था का वर्णन करता है। इसके समय में गणराज्यों का अंत हो चुका था अत: इसमें राजा का ही वर्णन है। शुक्र के अनुसार शासन का उद्देश्य जनता का सर्वांगीण विकास करना है।

(ट) अन्य ऐतिहासिक स्रोत–अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में विभिन्न कालखण्डों में रचित विभिन्न रचनाएं हैं। इसमें कल्हण रचित राजतरंगिणी प्रमुख है। इसमें प्राचीन काल से 12 वीं शताब्दी तक के कश्मीरी इतिहास का उल्लेख है। बाणभट्ट द्वारा रचित 'हर्ष चरित' में हर्ष के शासन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया गया है। पद्मगुप्त परिमल का 'नवसाहसांकचरित' परमार वंश की जानकारी देता है। वाक्पतिराज के काव्यग्रन्थ 'गौडवहों' से कन्नौज के राजा यशोवर्मन के शासन की जानकारी मिलती है। विल्हण रचित 'विक्रमांक देव चरित्र' ग्रन्थ से कल्याण के चालुक्य वंश के इतिहास का पता चलता है। पतंजलि के 'महाभाष्य' और कालिदास के 'मालविकाग्निमित्र' शुंग वंश के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। विशाखदत्त के 'मुद्राराक्षस' नाटक के द्वारा नंदवंश तथा मौर्यवंश का उल्लेख मिलता है। चन्दबरदाई की रचना 'पृथ्वीराज रासो' से तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक स्थिति की जानकारी मिलती है।

2. विदेशी स्रोत–भारतीय चिन्तन के अध्ययन का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्रोत विदेशी स्त्रोत कहलाता है। इसमें मुख्य रूप से विदेशों विद्वानों की रचनाओं, टीकाओं से प्राप्त सूचनाओं को शमिल किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से यूनानी एवं रोम के विचारकों को शामिल किया जाता है। यूनानी विचारकों को भी अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जाता है–

(क) सिकंदर के पूर्व के यूनानी विचारक–इसमें मुख्य रूप से स्काइलेक्स था, जो एक यूनानी सैनिक था। उसने अपनी पुस्तक में भारतीय सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था का वर्णन किया है। हेरोडोटस ने भी भारतीय व्यवस्था का वर्णन किया है। उसका विवरण मुख्यत: सीमावर्ती क्षेत्रों पर आधारित था।

(ख) पुरातत्व, अभिलेख, मुद्राएं, स्मारक, मूर्तियां, स्तूप–पुरातन अवशेष ही अनेक उलझी पहेलियों को सुलझाते हैं। भारत के इतिहास में प्राचीन समय से लेकर आज तक अनेक रहस्यों से पर्दा हट रहा है। इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका पुरातन अवशेषों का रहता है। इन्हीं के अध्ययन से हमें सातवाहन वंश के बाद के इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है। पुरातत्व में मुख्य रूप से प्राचीन अभिलेख, प्राचीन, मुद्रा, प्राचीन भवनों, स्मारकों आदि को शामिल किया जाता है। मार्शल, स्यूनर, आर.डी. बनर्जी ने अनेक स्थानों पर खुदाई कर नये तथ्यों को उजागर किया। उनके प्रयासों से इतिहास का नया स्वरूप तथा लोगों के सोच की धारा ही बदल गई।

(ग) मुद्राएँ–प्राचीन भारतीय इतिहास के ज्ञान का प्रमुख आधार मुद्राएं हैं। ईसा से पूर्व 200 से 300 ई. तक के भारत के इतिहास की सम्पूर्ण जानकारी हमें मुद्राओं के माध्यम से प्राप्त होती है। अनेक प्राचीन शासकों, जैसे–पल्लव, शक, बैक्ट्रियन के अध्ययन का आधार मुद्रा हैं। मुद्राओं में गुप्तकालीन मुद्राओं का बहुत महत्त्व है। वे न केवल अत्याधिक कलात्मक है, वरन् उसके निहितार्थ भी व्यापक हैं। ये राजा की वंशावली, तिथिक्रम तथा